नियम का फल

दृश्य (1)

सेठजी की दुकान – सेठजी बही खाता check कर रहे है।

मुनीम → जय जिनेन्द्र सेठजी।

सेठ → इतनी देर से क्यों आये हो। सारा हिसाब गड़बड़ है

मुनीम → मन्दिर गया था सेठजी। तो देरी हो गई। और मेरी तबियत ठीक नहीं थी तो हिसाब में गड़बड़ी हो गई होगी। मैं अभी

"मुनीम फिर पीछे मुड़ता है।

सेठ → कहां जा रहे हो?

मुनीम → जी मन्दिर।

सेठ → फिर मन्दिर?

मुनीम → जी सेठानी जी ने कहा था कि मन्दिर जी में अष्ट द्रव्य रखवा दूं

सेठ → क्यों रखवा दूं। free में आती है क्या सामग्री। मुझे नहीं करना दान वान। कोई जरुरत नहीं है मन्दिर में सामग्री रखवाने की। मेरे घर में भण्डार भरा है क्या

~~अब~~ फिर पीछे मुड़ने लगता है।

सेठ → अब कहां जा रहे हो?

मुनीम → जी ~~मन्दिर~~ धर्मशाला। सेठानी जी ने कहा था कि नगर में मुनि संघ आया है तो चौके की व्यवस्था देखनी है।

सेठ → कहीं नहीं जाओगे तुम। तुम मेरी नौकरी करते हो या सेठानी जी की। तुम्हे तनख्वाह कौन देता है। वो या मैं।

मुनीम → जी आप ही देते हो।

"और वो दुकान पर बैठ जाता है।

सेठ → सेठानी जी को तो मैं देखता हूँ।

दृश्य (2) सेठ घर पर जाता है।

सेठजी :- ये क्या दान वान देख रही हो तुम?

(सेठानी रोती हुई।)

सेठानी :- खुद तो दान पुण्य करते नहीं और मैं करती हूं तो करने नहीं देते।

सेठजी :- क्या होता है दान पुण्य करने से मुझे भी तो समझाओ

सेठानी :- अरे कोई धर्म से विमुख होकर रह सकता है। आपको पिछले जनम के दान से ही तो मिल रहा है। अभी दान करोगे तो ही तो आगे पुण्य मिलेगा

सेठजी :- मुझे मत समझाओ ये धर्म की बाते। मेरे पास व्यर्थ का पैसा नहीं है इस सब कामो के लिये। एक बार कह दिया सो कह दिया।

):- हे भगवान कोई इनको सद्‌बुद्धि दे

जी :- तुम्हें दे सद्‌बुद्धि मुझे नहीं।

अगला दृश्य

सेठानी माला फेर रही है। वहां सहेली आती है

सेठानी → अरे सुलोचना तुम। आज सुबह-सुबह।

सहेली → नगर में मुनि संघ आया है। तुम भी चलो मैं दर्शन करने जा रही हूं। तुम भी चलो दर्शन करने।

सेठानी → नहीं, मेरी तो सेठजी के साथ जाने की इच्छा है।

सहेली → तब तो हो गये तुम्हारे दर्शन।

सेठानी → हूं। →

अगला दृश्य :- सेठजी भोजन हेतु पधारते हैं।

सेठानी भोजन की थाली लेकर आती है।

सेठजी :- अरे वाह भागवान भोजन तो बड़ा स्वादिष्ट बनाया है। आज तुम जो कहोगी वह मैं दूंगा। कहो क्या मांगती हो।

सेठानी - वचन दिया?

सेठ → हां वचन दिया।

सेठानी → तो फिर कल प्रात: आप मेरे साथ चलेंगे

सेठ → कहां।

सेठानी → नगर में मुनि संघ आया है। वहां दर्शन के लिये चलना है आप भी मेरे साथ चलोगे।

सेठजी → क्यूं अपना समय व्यर्थ कर रही है मैं नहीं चलूंगा।

सेठानी → स्वामी आपने वचन दिया है।

सेठजी → तुम्हें हीरे जवाहारात जो चाहिये हो ले लो

सेठानी → नहीं ये भौतिक सुख सुविधायें हैं। ये मुझे नहीं चाहिये आपतो मुनिराज के दर्शन करने ले चलिये।

सेठजी → ठीक है। चलूंगा तुम्हारे साथ।

अगला दृश्य →
मुनिराज ध्यान में मग्न हैं।
सेठ सेठानी :- नमोस्तु महाराज!
मुनिराज :- धर्म वृद्धि हो!
सेठानी :- कैसे होगी धर्मवृद्धि महाराज? इनकी तो धर्म में रुचि ही नहीं है।

मुनिराज :- मन्दिर तो प्रतिदिन जाते ही होंगे ना?
सेठ :- कैसे जाऊं महाराज। दुकान से समय ही नहीं मिलता
मुनिराज → नियम पूर्वक प्रतिदिन मन्दिर अवश्य जाया करो।
सेठ :- कह तो रहा हूं महाराजजी समय ही नहीं मिलता
मुनिराज → तो आप नियम पूर्वक किसी भी वस्तु का प्रतिदिन दर्शन किया करें।
सेठ :- कुछ सोचकर। हां मुनिराज मेरे दुकान के सामने एक कुम्हार रहता है। उसका एक गधा है। मैं उसी का प्रतिदिन दर्शन किया करूंगा।
मुनिराज :- किन्तु नियम पूर्वक।

"इसी तरह समय बीतता जा रहा था सेठ रोज गधे का दर्शन करता फिर भोजन करता। परन्तु एक दिन उस जगह गधे को वहां न पाकर वो हैरान परेशान हो गया और इधर उधर ढूंढने लगा।
एक आदमी से पूछता है →
सेठ - अरे तुमने किसी गधे को देखा है।
आदमी :- मैं गधा तुम गधा यहां तो कुछ सभी गधे हैं। तुम्हें कौन सा गधा चाहिये। ढूंढते ढूंढते वो वहां पहुंच जाता है
सेठ और आगे जाता है जहां कुम्हार गधे को ले कर गया था मिट्टी ढोने के लिये। अचानक जमीन खोदते खोदते उसे कुछ आवाज सुनाई देती है। उसे वहां एक घड़ा मिलता है। उसमें कीमती जेवर होते हैं।
इसी समय सेठ भी वहां पहुंच जाता है और गधे को पाकर खुश हो जाता है।
सेठ :- देख लिया, देख लिया. - -

कुम्हार डर गया -

कुम्हार :- सेठजी किसी से नहीं कहना। मैं आपको भी इसमें से दे देता हूं। और वो सेठ को भी धन दे देता है

सेठ :- अरे इतना धन तो मुझे एक साथ आज तक अपनी दुकान से प्राप्त नहीं हुआ। एक तिर्यन्च के नियम पूर्वक दर्शन से मुझे इतना लाभ हुआ है यदि मैं जिनेन्द्र भगवान के दर्शन नियमपूर्वक प्रतिदिन करूंगा तो मुझे कितना पुण्य मिलेगा।

इसलिये मैं आज से प्रतिदिन देवदर्शन करूंगा वो भी नियम पूर्वक। एवं दान भी करूंगा और अपने जिनशासन को आगे बढ़ाऊंगा।

भजन :- "जिन शासन बड़ा निराला।"

PROP :- बही खाता, टेबल, शास्त्र, माला
कलश, जेवर, नगाड़ी, रेत, ...
खाने की थाली, कटोरी, बिजना